वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 307
ISBN 978-93-80353-19-7

बीस तीर्थंकर विधान

– रचयित्री –
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप रचना रजत जयंती महोत्सव–2010 एवं
शांतिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक
महोत्सव (11 से 21 फरवरी 2010) के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फरवरी 2010	32/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–
धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

आचार्यश्री कुन्दकुन्दस्वामी ने रयणसार में श्रावकों को उनके कर्त्तव्यों से परिचित करवाते हुए कहा– **दाणं पूजा मुक्खो, सावयधम्मो ण सावया तेण विणा।''**

अर्थात् ''श्रावक के लिए दान एवं पूजा मुख्य कर्तव्य है, उसके बिना वह श्रावक धर्म का पालक नहीं कहलाता है।'' आदिपुराण में पूजा के 5 भेद माने गए हैं– नित्यमह, आष्टान्हिक, इन्द्रध्वज, चतुर्मुख और कल्पद्रुम। भगवान तो कृतकृत्य हो चुके हैं, आप उनकी पूजा करें या न करें, उनकी महिमा में कोई अन्तर नहीं आता है लेकिन पूजा करने वाला भक्त परम्परा से मोक्ष भी प्राप्त कर लेता है।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति को आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी ने कामधेनु की उपमा दी है–

''कामदुहि कामदाहिनि परिचिनुयादादृतो नित्यम्।'' उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि–

पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य, सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ।
दोषाय नालं कणिका विषस्य, न दूषिका शीत शिवाम्बुराशौ।।

अर्थात् हे भगवन्! आप पूज्य हैं, जिन हैं, आपकी पूजा करने वाले मनुष्य के जो आरंभ जनित थोड़ा सा भी पाप होता है वह बहुत बड़ी पुण्य की राशि में उसी प्रकार दोष का कारण नहीं है जैसे शीतल जल से युक्त बहुत बड़े समुद्र में विष की कणिका डाल देने पर भी वह जल को दूषित नहीं कर सकती है।

हम पुण्यशाली है कि उन वीतराग देव की भक्ति द्वारा कर्मनिर्जरा करने हेतु सत्साहित्य की प्रदात्री, अनेकानेक ग्रंथों की रचयित्री गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सुसानिध्य हमें अपने जीवनकाल में प्राप्त हुआ, जिनकी लेखनी में आगम का प्रतिरूप दर्पणवत् झलकता है। 250 से भी अधिक ग्रंथों के सृजन में पूज्य माताजी ने अनेक लघु एवं वृहत्काय विधानों की रचनाकर जिनेन्द्र भगवान की भक्ति का सरल माध्यम भव्यात्माओं को प्रदान किया है जिससे वास्तव में पूजक भक्त क्रम परम्परा से मुक्ति की प्राप्ति में भी समर्थ हो सकता है। उसी शृँखला में यह कृति ''बीस तीर्थंकर विधान'' भी है। वस्तुतः साहित्यजगत सदैव उनका चिरऋणी रहेगा।

हमें गौरव है कि वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा समय-समय पर पूज्य माताजी द्वारा लिखित ग्रंथों को प्रकाशित करने का सौभाग्य हमें प्राप्त होता रहता है। भक्तिमार्ग द्वारा कर्मक्षय में निमित्तभूत इन विधानों द्वारा आप सभी पुण्य सम्पादन करते हुए कर्मशृँखला को काटने में सक्षम होवें, यही शुभेच्छा है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दू जैन (संघस्थ)

मध्यलोक के असंख्यात द्वीप-समुद्रों में प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है उसको घेरकर लवण समुद्र है, लवण समुद्र को घेरकर धातकीखण्ड पुनः कालोदधि समुद्र है, इसको घेरकर पुष्करवर द्वीप पुनः पुष्करवर समुद्र है। पुष्करद्वीप के ठीक बीच में चूड़ी के समान आकार वाला एक मानुषोत्तर पर्वत है, इस पर्वत तक ही मनुष्य लोक की सीमा है जिसे आगम की भाषा में ढ़ाई द्वीप कहते हैं। इसके आगे भी असंख्यात द्वीप एवं समुद्र हैं।

इन ढ़ाई द्वीपों में 5 भरत एवं 5 ऐरावत क्षेत्र के आर्यखण्ड में षट्काल परिवर्तन होता रहता है अतः इनमें मात्र चतुर्थकाल में ही 24 तीर्थंकर होते रहते हैं। वर्तमान में पंचमकाल चल रहा है अतः वर्तमान में यहाँ कोई तीर्थंकर नहीं हैं। किन्तु ढ़ाई द्वीप के 32 विदेह क्षेत्रों में सदैव चतुर्थकाल ही रहता है अतः वहाँ तीर्थंकर हमेशा विद्यमान रहते हैं, वर्तमान में वहाँ 20 तीर्थंकर विद्यमान हैं।

चूँकि ढ़ाई द्वीप के पाँच मेरु संबंधी 5 महाविदेहों में ये 20 तीर्थंकर सतत विहार करते रहते हैं अतः इन्हें ''विहरमाण बीस तीर्थंकर'' भी कहते हैं। कम से कम इतने तीर्थंकर तो विदेह क्षेत्र में सतत रहते ही हैं और अधिक से अधिक यदि एक साथ होवें तो पाँचों मेरु संबंधी 160 तीर्थंकर एक साथ विदेह क्षेत्र में रह सकते हैं। प्रत्येक विदेहों में भी भरतक्षेत्र के समान 6-6 खण्ड होते हैं उनमें भी आर्यखण्डों में ही तीर्थंकर का जन्म होता है। विदेह क्षेत्र में उत्कृष्ट आयु 1 कोटि पूर्व की है अतः वे तीर्थंकर भी अपनी आयु पूर्णकर जब मोक्ष चले जाते हैं तब वहीं विदेह क्षेत्र में दूसरे तीर्थंकर का जन्म होता है।

नित्यमह पूजा करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ प्रायः मंदिरों में बीस तीर्थंकर की पूजा करते अथवा अर्घ्य चढ़ाते देखे जाते हैं किन्तु उनका पूजन-विधान कहीं देखने में नहीं आता है। जिनेन्द्र भगवान के प्रति अकाट्य भक्ति रखने वाली 250 से भी अधिक ग्रंथों की रचयित्री पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगम का गूढ़ अवलोकन करके उन कठिन से कठिन, मात्र शास्त्रानुभूत विषयों को भी सरल, सुगम बनाकर जनमानस को प्रदान किया है, जिसके लिए यह साहित्यजगत उनका सदैव गुणानुवाद करेगा। साक्षात्

देवीस्वरूपा पूज्य माताजी की लेखनी से रचित प्रत्येक ग्रंथ ज्ञानपिपासु, आत्मजिज्ञासु और संसार जलधि से पार होने वाले जीव के लिए सेतु के समान है। आज के कलिकाल में हमें भले ही तीर्थंकर भगवन्तों की दिव्यवाणी सुलभ नहीं है लेकिन हम सबके सौभाग्य से पूर्वाचार्यों द्वारा जो आगम में लिपिबद्ध किया गया उस वाणी को जन-जन तक पहुँचाने वाली इस युग की सर्वप्राचीन दीक्षित साध्वी पूज्य माताजी हमारे लिए सरस्वतीस्वरूपा हैं जो हम जैसे भूले-भटके प्राणी को संसार समुद्र से निकालकर मुक्ति का मार्ग प्रदान कर रही हैं, जिनेन्द्र भक्ति का सरल माध्यम दे रही हैं। उन्हीं जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति में तन्मय कर पुण्यप्रदात्री यह रचना ''बीस तीर्थंकर विधान'' है।

इस विधान में सर्वप्रथम बीस तीर्थंकर स्तुति है। पूजा विधान में कुल 6 पूजाएँ हैं, उसमें प्रथम पूजा समुच्चय पूजा है। द्वितीय पूजा में 20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य, तृतीय पूजा में 20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य, चतुर्थ पूजा में 20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य एवं पंचम पूजा में 20 अर्घ्य 6 पूर्णार्घ्य हैं, इस प्रकार कुल 100 अर्घ्य एवं 26 पूर्णार्घ्य एवं 6 जयमालाएँ हैं। इन जयमालाओं में तो मानो गागर में सागर ही समाया है। ऐसी सारभूत, कर्मनिर्जरा में कारणभूत कृतिके द्वारा आप सब भगवान की भक्ति कर अचिन्त्य शक्ति की प्राप्ति करें, यही भावना है।

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुरमहोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि।**विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तकआने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शरीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तरांचल)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा—गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री ऋषभदेव भगवान
	—श्री अजितनाथ भगवान
	—श्री अभिनंदननाथ भगवान
	—श्री सुमतिनाथ भगवान
	—श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	—श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	—श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	—श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	—श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	—श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	—श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी	—श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	—श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	—श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	—श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	—श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	—श्री शांतिनाथ भगवान
	—श्री कुन्थुनाथ भगवान
	—श्री अरनाथ भगवान

13. **मिथिलापुरी** —श्री मल्लिनाथ भगवान
—श्री नमिनाथ भगवान
14. **राजगृही (नालंदा-बिहार)** —श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. **शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)** —श्री नेमिनाथ भगवान
16. **कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)** —श्री महावीर भगवान

विशेष—ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

निवेदक – **अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी**
अध्यक्ष – **कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, जम्बूद्वीप**
प्रधान कार्यालय – **जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**
फोन नं.-01233-280184, 280236

मण्डल के विधान का नक्शा

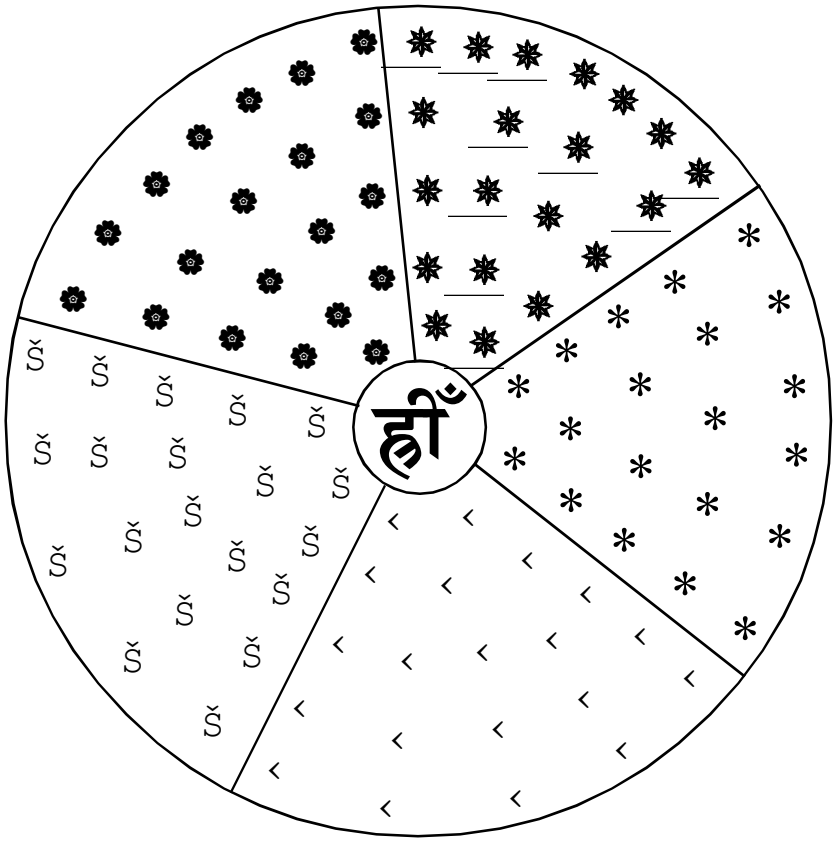

प्रथम वलय में —20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य
द्वितीय वलय में —20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य
तृतीय वलय में —20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य
चतुर्थ वलय में —20 अर्घ्य 5 पूर्णार्घ्य
पंचम वलय में —20 अर्घ्य 6 पूर्णार्घ्य
कुल —100 अर्घ्य एवं 26 पूर्णार्घ्य

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

अथ बीस तीर्थंकर विधान प्रारंभ

बीस तीर्थंकर नाम स्तुतिः

श्रीमान् सीमंधरोदेवः, भगवान् श्री युगमंधरः।
बाहुस्वामी सुबाहुश्च, श्री सुजातःस्वयंप्रभुः।।1।।

वृषभाननतीर्थेशो-ऽनंतवीर्यः जिनेश्वरः।
सूरिप्रभः श्रीविशाल-कीर्तिर्वज्रधरो जिनः।।2।।

चंद्राननो भद्रबाहुः, भुजंगमस्तथेश्वरः।
नेमिप्रभो वीरसेनः , महाभद्रो महानपि।।3।।

देवयशोऽजितवीर्यश-चेत्येते विंशतिर्जिनाः।
कुर्वंतु मंगलं नित्यं, विद्यमाना विदेहजाः।।4।।

जम्बूद्वीपेऽथ मध्येऽस्ति, मेरोः पूर्वापरदिशोः।
पूर्वापरविदेहौ तन्मध्ये नद्यौ च द्वे अपि।5।।

ततश्चतुर्भागेष्वपि, चतुर्वक्षारशैलतः ।
त्रिविभंगानदीभिश्चा-प्यष्टौ भागा विदेहके।।6।।

द्वात्रिंशत् ये विदेहा स्युः, तावंतः प्रतिमेर्वपि।
विदेहनामक्षेत्राणि, षष्ट्युत्तरशतानि वै।।7।।

सीताया उत्तरे भागे, ह्यास्ते सीमंधरो जिनः।
दक्षिणे राजते चापि, युगमंधरतीर्थकृत् ।।8।।

सीतोदापाचि श्री बाहुः, सुबाहुरुत्तरे तटे।
प्रत्यहं विहरन्तो ये, कुर्युरत्रापि मंगलं।।9।।

पंचमहाविदेहेषु, चतुष्चतुर्जिनेश्वराः।
एवं विंशतयोऽप्येते, विहरंति सदा भुवि।।10।।

हीनादपि विंशतियो, युगपत् चाधिका अपि।
सप्तत्युत्तरशतानि, तीर्थंकरा भवंत्यपि।।11।।

भरतैरावतस्थानां , संख्येयं दशमेलने।
तांस्तान् सर्वांश्च वंदेऽहं, ज्ञानमत्यै श्रियै ध्रुवं।।12।।

केचिच्च द्वित्रिकल्याणा,अपि तत्र भवंत्यमीः।
सर्वे पुनंतु मे चित्तं, पंचकल्याणनायकाः।।13।।

स्तोत्रमेवं पठेन्नित्यं, दर्शनं प्राक् करोत्यसौ।
सीमंधरजिनस्यानु, सर्वकल्याणभाग् भवेत् ।।14।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

बीस तीर्थंकर नाम स्तुति

(हिन्दी)

श्रीमान् सीमंधर युगमंधर, बाहू जिन तथा सुबाहू हैं।
संजात स्वयंप्रभ वृषभानन, श्रीअनंतवीर्य को ध्याऊँ मैं।।
श्री सूरप्रभ विशालकीर्ति, जिनराज वज्रधर चन्द्रानन।
श्री भद्रबाहु जिन भूजंगम, ईश्वर नेमिप्रभ शिवासान।।1।।

श्री वारिषेण और महाभद्र, जिनदेव देवयश अजितवीर्य।
ये बीस जिनेश्वर विद्यमान, रहते विदेह में जगतकीर्त्य।।
इन सबको मेरा नमस्कार, हो बार बार ये सुखकारी।
ये बीसों तीर्थंकर नितप्रति, हों हम सबको मंगलकारी।।2।।

इस जम्बूद्वीप मध्य मेरु के, पूर्व अपर दिश में जानो।
ये पूर्व और पश्चिम विदेह, इन दोनों मध्य नदी मानो।।
इस विध इन चारों भागों में, चउ चउ वक्षार शैल माने।
त्रय-त्रय विभंग नदियों से भी, इक इक के आठ भेद माने।।3।।

ये सब बत्तीस विदेह हुये, इस विध प्रत्येक मेरु के भी।
बत्तिस- बत्तीस कहे इससे, हैं इक सौ साठ विदेह सभी।।
इस जम्बूद्वीप में सीमा के, उत्तर में ''सीमंधर'' जिन हैं।
सीता नदि के दक्षिण तट में, नित राजित ''युगमंधर'' जिन हैं।।4।।

सीतोदा दक्षिण ''बाहू'' जिन, उत्तर दिश में ''सुबाहु'' राजें।
वे विहरें वहाँ तथापि यहाँ, पर भी हों नित मंगल काजें।।
पाँचों भी महाविदेहों में, हैं चार-चार जिन तीर्थंकर।
ये बीसों नित्य विहरते हैं,शाश्वत जिनवर इस पृथ्वी पर।।5।।

कम से कम बीस तथा युगपत्,हों अधिक-अधिक भी यदी कभी।
इक सौ सत्तर हो सकते हैं, तीर्थंकर जग में कभी -कभी।।
भरतैरावत दश क्षेत्रों के, दश मिलने से ही यह गणना।
ध्रुव ''ज्ञानमती'' लक्ष्मी हेतू , उन सबको वंदू पुनः पुना।।6।।

कोई-कोई जिन विदेह में, दो तीन कल्याणक को भि धरें।
औ पंचकल्याणक के स्वामी, वे सब मम चित्त पवित्र करें।।
जो नितप्रति यह स्तोत्र पढ़ें, वे पहले सीमंधर जिन के।
दर्शन करते हैं फिर निश्चित, संपूर्ण कल्याणक को भजते।।7।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

पूजा नं.1

विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा

(समुच्चय)

–स्थापना (गीता छंद)–

सीमंधरादिक बीस तीर्थंकर विदेहों में रहें।
जिनकी सभा में आज भी भविवृंद निज कल्मष दहें।।
उन विद्यमान जिनेश की मैं नित करूँ आराधना।
पूजन करूँ अति भक्ति से निज तत्त्व की ही साधना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं विदेहक्षेत्रस्थसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अथ अष्टक (स्रग्विणी छंद)–

पद्म द्रह का सलिल गंधवासित लिया।
नाथ चरणाब्ज में तीन धारा किया।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यःजन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर चंदन घिसा के लिया।
आप पादाब्ज में चर्च के अर्चिया।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यःसंसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कौमुदी धौत तंदुल लिये थाल में।
आप पादाग्र में पुंज को धार मैं।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मौलसिरि मालती पुष्प ताजे लिये।
कामशर के जयी आपको अर्पिये।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ियाँ लड्डुकादी भरे थाल में।
पूजते भूख व्याधी नशे हाल में।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति कर्पूर की ध्वांत हर जगमगे।
दीप से अर्चते ज्ञानज्योती जगे।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध खेऊँ सदा अग्नि में।
कर्म संपूर्ण हों भस्म तुम भक्ति में।।

बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर नींबू बिजौरा लिया।
मोक्षफल हेतु प्रभु आपको अर्पिया।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य में रत्न सुंदर मिले हैं भले।
पूजते ''ज्ञानमति''स्वात्म निधियाँमिलें।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ नाथ पादाब्ज में।
शांति आत्यंतिकी शीघ्र हो नाथ में।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कुंद कल्हार जूही चमेली खिले।
पुष्प अंजलि करुँ सौख्य संपति मिले।।
बीस तीर्थंकरों की करूँ अर्चना।
हो प्रभू भक्ति से मोह की वंचना।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(108 बार या 9 बार)

जयमाला

–पंचचामर छंद–

जयो जयो जयो जिनेंद्र इंद्रवृंद बोलते।
त्रिलोक में महागुरू सु आप नाम तोलते।।
सुधन्य धन्य धन्य आप साधुवृंद बोलते।
जिनेश आप भक्त ही तो निज किवांड खोलते।।1।।

समोसरण में आपके महाविभूतियाँ भरीं।
अनेक ऋद्धि सिद्धियाँ सुआप पास में खड़ीं।।
अनंत अंतरंग गुण समूह आप में भरें।
गणीन्द्र औ सुरेंद्र चक्रि आप संस्तुती करें।।2।।

हरिन्मणी के पत्र पद्मराग के सुपुष्प हैं।
अशोक वृक्ष देखते समस्त शोक अस्त हैं।।
अनेक देववृंद पुष्पवृष्टि आप पे करें।
सुगंध वर्ण वर्ण के सुमन खिले खिले गिरें।।3।।

जिनेश आपकी ध्वनी अनक्षरी सुदिव्य है।
समस्त भव्य कर्ण में करे सुअर्थ व्यक्त है।।
न देशना कि चाह है न तालु ओष्ठ पुट हिलें।
असंख्य जीव के धुनी से चित्त पद्मिनी खिलें।।4।।

सुचामरों कि पंक्तियाँ ढुरें ये सूचना करें।
नमें तुम्हें सुभक्त वे हि ऊर्ध्व में गमन करें।।
सुसिंहपीठ आपका अनेक रत्न से जड़ा।
विराजते सु आप हैं अतः महत्व है बढ़ा।।5।।

प्रभा सुचक्र कोटि सूर्य से अधिक प्रभा करे।
समस्त भव्य के उसी में सात भव दिखा करें।।
सुदेवदुन्दुभी सदा गभीर नाद को करे।
असंख्य जीव का सुचित्त खींच के वहाँ करे।।6।।

सफेद छत्र तीन जो जिनेश शीश पे फिरें।
प्रभो त्रिलोकनाथ आप सूचना यही करें।।
सुप्रातिहार्य आठ ये हि बाह्य की विभूतियाँ।
सुरेश ने रचे तथापि आप पुण्यराशियाँ।।7।।

प्रभो !तुम्हीं महान मुक्तिवल्लभापती कहे।
प्रभो! तुम्हीं प्रधान ईश सर्व विश्व के कहे।।
प्रभो! तुम्हें सदा नमें सुभक्ति आप में धरें।
अनंत काल तक वहीं अनंत सौख्य को भरें।।8।।

–दोहा–

तुम गुण सूत्र पिरोय स्रज, विविध वर्णमय फूल।
धरें कण्ठ उन ''ज्ञानमति'', लक्ष्मी हो अनुकूल।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोग कर फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल ''ज्ञानमति'' हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पाञ्जलिः ।।

पूजा नं.-2

सीमंधर आदि चार तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद)–

इस प्रथम जम्बूद्वीप बीचे, पूर्व अपर विदेह हैं।।
इन मध्य बत्तिस देश में, शुभ कर्मभूमि सदैव हैं।।
भगवान सीमंधर व युगमंधर व बाहु सुबाहु हैं।
ये श्रीविहार करें वहाँ, आह्वान कर मैं पूजहूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक (चाल-नंदीश्वर पूजा)

सीता नदि शीतल नीर, प्रभु पद धार करूँ।
मिट जावे भव भव पीर, आतम शुद्ध करूँ।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि गंध सुगंध, प्रभु चरणों चर्चूं ।
मिल जावे आत्म सुगंध, स्वारथवश अर्चूं ।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कौमुदी शालि के पुञ्ज, नाथ! चढ़ाऊँ मैं।
निज आतम सौख्य अखण्ड, अर्चत पाऊँ मैं।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वर मौलसिरी व गुलाब, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
प्रभु मिले आत्मगुण लाभ, आप रिझाऊँ मैं।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू पेड़ा पकवान, नाथ! चढ़ाऊँ मैं।
कर क्षुधा वेदनी हान, निज सुख पाऊँ मैं।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति अखण्ड, आरति करते ही।
मिल जावे ज्योति अमंद, निज गुण चमके ही।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप अगनि में खेय, सुरभि उड़ाऊँ मैं।
प्रभु पद पंकज को सेय, सम सुख पाऊँ मैं।।

श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला एला बादाम, फल से पूजूँ मैं।
पाऊँ निज में विश्राम, भव से छूटूं मैं।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यःमोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु अर्घ्य रजत के पुष्प, थाल भराय लिया।
हो ''ज्ञानमती'' मन तुष्ट, आप चढ़ाय दिया।।
श्री विहरमाण जिनराज, मेरी अरज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज, मैं तुम चरण नमों।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहु चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **नाथ पाद पंकेज, जल से त्रय धारा करूँ।**
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा विश्व में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ।
मिले आत्मसुख लाभ, जिन पद पंकज पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

–दोहा–

इक सौ साठ विदेह में, बीस तीर्थंकर आज।
समवसरण में राजते, नमत सरें सब काज।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

(प्रथम वलय में 20 अर्घ्य)

श्री सीमंधर तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–पंचकल्याणक अर्घ्य–

श्रीमती मात स्वप्ने देखें, श्रेयांस नृपति से फल पूछें।
तीर्थंकर सुत जननी होंगी, सुन माता मन में अति हर्षें।।
इन्द्रों ने उत्सव किया विविध, धनपति ने रत्नवृष्टि की थी।
हम पूजें गर्भकल्याणक नित,जिससे होवे धन की वृष्टी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीमंधर प्रभु ने जन्म लिया, स्वर्गों में बाजे बाज उठे।
सुरपति के सिंहासन कंपे, इंद्रों के मस्तक मुकुट झुकें।।
प्रभु वृषभ चिन्ह पितु मात धन्य, जनता में हर्ष अपार हुआ।
हम पूजें गर्भ कल्याणक नित, पूजत ही चित्त प्रसन्न हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर तीर्थंकर जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर प्रभु जब राज्य छोड़, दीक्षा लेने का भाव किया।
लौकान्तिक सुर ने आकर के, प्रभु की संस्तुति कर पुण्य लिया।।
प्रभु ने जिन दीक्षा ग्रहण किया, अति घोर तपस्या करने को।
हम पूजें दीक्षा कल्याणक, निज जन्म मरण दुख हरने को।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकर दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को जब केवलज्ञान हुआ, धनपति ने तत्क्षण ही आकर।
गगनांगण में प्रभु समवसरण, रच दिया अखिल वैभव लाकर।।
पूरब विदेह में आज वहाँ,प्रभु समवसरण में राज रहे।
हम पूजें ज्ञानकल्याणक को, प्रभु समवसरण में राज रहे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घात अघाती कर्मों को, निश्चित ही मुक्ती पायेंगे।
हम भी उनकी भक्ती करके, निश्चित ही कर्म जलायेंगे।।
उन प्रभु का मोक्षकल्याणक हम, भक्ती से पूजें पुण्य भरें।
आत्मा को शुद्धात्मा करके, निज मानव जीवन धन्य करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकर मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

जम्बूद्वीप में पूर्वदिश, पुण्डरीकिणी नाम।
सीमंधर प्रभु को जजूँ , शत शत करूँ प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री युगमंधर तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद–

मेरू सुदर्शन पूर्व क्षेत्र विदेह में दक्षिण दिशी।
विजया नगरि दृढ़रथ पिता माता सुतारा ने निशी।।
शुभ स्वप्न सोलह देखकर हर्षितमना पतिदेव से।
फल पूछतीं प्रभु गर्भकल्याणक जजूँ अति भक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमंधरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदि देवी मात की सेवा करें अति भक्ति से।
अति गूढ़ करतीं प्रश्न वे उत्तर दिया माँ युक्ति से।।
प्रभु जन्मते ही इन्द्रगण अति हर्ष से उत्सव किया।
सौधर्म सुरपति ने सुमेरू पर न्हवन विधिवत् किया।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमंधरतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य प्रभु का जानकर देवर्षि सुरगण आ गये।
शुभ पालकी में बिठाकर उद्यान सुन्दर ले गये।।
सम्पूर्ण परिग्रह छोड़कर प्रभु ने स्वयं दीक्षा लिया।
मनपर्ययी ज्ञानी हुये शुभ ध्यान आत्मा का किया।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमंधरतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्लध्यान प्रभाव से चउ घातिया का क्षय किया।
कैवल्य लक्ष्मी प्राप्त कर छ्यालीस गुण प्रगटित किया॥

जिन समवसृति में अधर राजें इंद्र शत मिल पूजते।
हम भी जजें कैवल्य संपति प्राप्ति हेतू भक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमंधरतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजचिन्हधारी नाथ 'युगमंधर' अघाती घातके।
निर्वाण पद को पायेंगे मैं जजूँ कर द्वय जोड़के।।
ये प्रभू संप्रति राजते सुविदेह जम्बूद्वीप में।
जो भक्ति से नित पूजते वे दर्श प्रभु का पायेंगे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमंधरतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

युगमंधर भगवान हैं, पंचकल्याणक ईश।
पूर्ण अर्घ्य ले मैं जजूँ , नमूँ नमाकर शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमंधरतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री बाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद–

श्री जम्बूद्वीप अपर विदेह, सीतोदा नदि के दक्षिण में।
श्री पुरी सुसीमा के राजा, उन रानी को शुभ स्वप्न दिखे।।
इन्द्रों ने गर्भोत्सव करके, प्रभु मात पिता की पूजा की।
हम भी जिन गर्भकल्याण जजें, मुझ गर्भ दुःख छूटे झटिती।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब प्रभु ने जन्म लिया भूपर, देवों के आसन कांप उठे।
झुक गये मुकुट सब इंद्रों के, चल पड़े नगरि में भक्ती से।।
मृग चिन्ह सहित श्री बाहुनाथ ने, त्रिभुवन जन को मुदित किया।
मेरू पर सुरगण न्हवन किया, प्रभु जन्म जजत सुख प्राप्त किया।।2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भव तनु भोग विरक्त हुये, बारह भावन भाई उत्तम।
लौकान्तिक सुर ने स्तुति की, पालकी सजाई उस ही क्षण।।
''सिद्धेभ्यो नमः'' मंत्र पूर्वक, दीक्षा स्वयमेव लिया प्रभु ने।
सुरपति ने उत्सव किया तभी, मैं नमूँ नमूँ प्रभु चरणों में ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तरु के नीचे प्रभुवर को, कैवल्यज्ञान रवि उदित हुआ।
वह तरु ' अशोक 'हो गया स्वयं, प्रभु समवसरण में शोभ रहा।
श्री बाहुनाथ तीर्थंकर प्रभु ,विहरण कर भविजन हर्षाते।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ाकरके, प्रभु धर्मामृत ध्वनि बरसाते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म अघाती नाश सभी, निर्वाण धाम को पायेंगे।
उन मोक्षकल्याणक पूजा कर, हम भी निज कर्म नशायेंगे।।
तीर्थंकर प्रभु की पूजा से, निज आत्मा स्वयं तीर्थ बनती।
सम्पूर्ण अमंगल टल जाते, भव भव की जनम व्याधि नशती।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुतीर्थंकर मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पंचकल्याणक अधिपती, बाहुनाथ परमेश।
पूर्ण अर्घ्य लेकर जजूँ, पाऊँ सौख्य हमेश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री सुबाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौबोल छंद–

श्री जम्बूद्वीप अपर विदेह, सीतोदा के उत्तर में।
हैं पुरी अयोध्या के राजा, उन अंतःपुर आंगन में।।

रत्न बरसते पिता खुशी से, बांट रहे हैं जन-जन में।
इंद्र महोत्सव करते मिलकर, जजूँ गर्भकल्याणक मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबाहुतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत हाथी पर चढ़कर, इंद्र शची सह आते हैं।
जिन बालक को गोदी में ले, सुरगिरि पर ले जाते हैं।।
मर्कट चिन्ह सहित प्रभुवर का, जन्म महोत्सव करते हैं।
जिनवर जन्मकल्याणक जजते, हम सुख संपति भरते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबाहुतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् कारण पाकर जिनवर,भव तनु भोग विरक्तहुये।
लौकान्तिक सुर स्तुति करते, प्रभु गुण में अनुरक्त हुये।।
रत्नजटित पालकि में प्रभु को, बिठा श्रेष्ठ वन पहुँचे।
प्रभुवर स्वयं दिगंबर दीक्षा,लेकर ध्यानमगन तिष्ठे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबाहुतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत वर्ष तक तपश्चरण कर, कर्म घातिया दग्ध किया।
दोष अठारह दूर हुये, संपूर्ण गुणों को प्रगट किया।।
केवलज्ञान ज्योति जगते ही, समवसरण की है रचना।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजत ही मैं, निश्चित पाऊँ सुख अपना।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबाहुतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीजे चौथे शुक्लध्यान से, योगनिरोध करेंगे ही।
निज के गुण अनंत को पाकर, शिवपद प्राप्त करेंगे ही।।
इंद्र सभी मिल मोक्षकल्याणक, उत्सव भक्ति करेंगे ही।
हम भी प्रभु का मोक्ष कल्याणक, पूजत सौख्य भरेंगे ही।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबाहुतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्री सुबाहु भगवान के, पंचकल्याणक वंद्य।
पूर्ण अर्घ्य कर भक्ति से, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबाहुतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य (चौपाई)–

पूर्वापर बत्तीस विदेह, चार तीर्थंकर नित विहरेय।
पूजूँ पूरण अर्घ्य चढ़ाय, सब दुख संकट जांय पलाय।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(108 बार या 9 बार)

जयमाला

–अनंगशेखर छंद–

नमो नमो जिनेंद्रदेव! आप सौख्यरूप हो।
अनंत दिव्यज्ञान से ,समस्त लोक भासते।।
नमो नमो जिनेंद्रदेव! आप चित्स्वरूप हो।
अनंत दिव्य चक्षु से समस्त विश्व लोकते।।1।।

नमो जिनेंद्रदेव! आप सर्वशक्तिमान हो।
अनंत वस्तु देखते तथापि नहीं श्रांत हो।।
नमो जिनेंद्रदेव! आपमें अनंत गुण भरे।
गणींद्र भी गिनें तथापि पार पावते नहीं।।2।।

प्रभो! असंख्य भव्य जीव आपकी शरण गहें।
अनादि के अनंत दुःख वार्धि से स्वयं तिरें।।
असंख्य जीव मानवश न आप पास आवते।
स्वयं हि वे अपार भव अरण्य में सदा फिरें।।3।।

अनेक जीव दृष्टि रत्न पायके निहाल हों।
अनेक जीव तीन रत्न पाय मालामाल हों।।
अनेक जीव आप भक्ति में विभोर हो रहे।
अनेक जीव मृत्यु को पछाड़ पुण्यशालि हों।।4।।

मुनींद्र वृंद हाथ जोड़ शीश नाय नाय के।
पुनः पुनः नमें तथापि तृप्ति ना लहें कभी।।
सुरेंद्रवृंद अष्टद्रव्य लाय अर्चना करें।
सुदिव्य रत्न को चढ़ाय तृप्ति ना लहें कभी।।5।।

नरेंद्रवृंद भक्ति में विभोर नृत्य भी करें।
सुरांगना जिनेंद्रभक्ति गीत गा रहीं वहाँ।।
खगेंद्रवृंद गीत गा संगीत वाद्य को बजा।
खगांगना के साथ नाथ! अर्चना करें वहाँ।।6।।

जिनेंद्र! आपकी सभा असंख्य भव्य से भरी।
तथापि क्लेश ना किसी को ये प्रभाव आपका।।
निरक्षरी ध्वनी खिरे सभी के कर्ण में पड़े।
सभी समझ रहें स्वयं प्रभो ! प्रभाव आपका।।7।।

सुभव्य जीव ही सुनें गुनें निजात्म तत्व को।
अपूर्व तेज आपका न कोई पार पा सके।।
जयो जयो जयो प्रभो! अनंत ऋद्धि पूर्ण हो।
करो मुझे निहाल नाथ! आप भक्ति जान के।।8।।

दोहा – **सीमंधर युगमंधरा, बाहु सुबाहु जिनेश।**
नमूँ 'ज्ञानमती' हेतु मैं, हरो सर्व भवक्लेश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपस्थपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ सीमंधरादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यःजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

–गीता छंद–

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोगकर फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल '' ज्ञानमति '' हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-3

पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधि विहरमाण तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

वर पूर्व धातकिखण्ड में, जो पूर्व अपर विदेह हैं।
उनमें सदा विहरें जिनेश्वर, चार शिव परमेश हैं।।
उन कर्मभूमी में सदा, जिनधर्म अमृत बरसता।
मैं पूजहूँ आह्वान कर, निज आत्म अनुभव छलकता।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकस्वयंप्रभ-ऋषभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकस्वयंप्रभ-ऋषभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकस्वयंप्रभ-ऋषभाननअनंतवीर्यतीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं ।

–अथ अष्टक (शेर छंद) –

हे नाथ! आप पाद में त्रय धार मैं करूँ।
निज चित्त ताप शांति हेतु आश मैं धरूँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यःजन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप चर्ण में चंदन विलेपते।
संपूर्ण ताप नष्ट हो निज तत्त्व लोकते।।

तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यःसंसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप अग्र शालि पुञ्ज चढ़ाऊँ ।
अक्षय अखण्ड सौख्य हेतु आश लगाऊँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप चर्ण पुष्पमाल चढ़ाऊँ।
संपूर्ण सौख्य पाय देह कांति बढ़ाऊँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप सामने नैवेद्य चढ़ाऊँ।
उदराग्नि को प्रशमित करूँ निज शक्ति बढ़ाऊँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! दीप लेय आप आरती करूँ।
अज्ञान तिमिर नाश ज्ञानभारती भरूँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप भक्ति से सम्यक्त्व को पाऊँ।
वर धूपघट में धूप खेय कर्म जलाऊँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! श्रेष्ठ फल चढ़ाय अर्चना करूँ।
चारित्र लब्धि पाय दुःख रंच ना भरूँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ!अर्घ्य लेय रजत पुष्प मिलाऊँ।
निजात्म तत्त्व प्राप्ति हेतु अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
तीर्थंकरों के पादकमल चित्त में धरूँ।
अनिष्ट के संयोगजन्य दुःख को हरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

नाथ पाद पंकेज, जल से त्रय धारा करूँ।
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ।
मिले आत्मसुखलाभ, जिन पद पंकज पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(द्वितीय वलय में 20 अर्घ्य)

–दोहा–

समवसरण में राजते, तीर्थंकर परमेश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, नशें सर्वमन क्लेश।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्री संजातक तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–नरेंद्र छंद–

पूर्व धातकी विदेह पूरब, सीतानदि उत्तर पे।
अलकापुरि में देवसेन पितु , मातु देवसेना के।।
गर्भ बसे श्री संजातक प्रभु,सुरपति सुरगण पूजें।
पुनर्जन्म के नाश हेतु हम, गर्भकल्याणक पूजें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संजातकतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदि देवियों पूजित माँ से, जन्म लिया तीर्थेश्वर।
सुरपति जिन बालक को लेकर, बैठे ऐरावत पर।।
सुरगिरि पहुँचे जन्म महोत्सव,किया इंद्रगण मिलकर।
जन्मकल्याणक मैं नित पूजूँ ,मिले जनम अविनश्वर।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संजातकतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवी चिन्हयुत प्रभु विरक्त जब, इंद्र सभी मिल आये।
मणिमय रत्न पालकी में तब, प्रभुवर को बैठाये।।
मनहारी उद्यान पहुँच कर ,प्रभु ने जिनदीक्षा ली।
दीक्षाकल्याणक जजते ही,मिले स्वात्मगुण शैली।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संजातकतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत काल तक तपश्चरण कर, दीक्षा वन में पहुँचे।
शुक्लध्यान में लीन प्रभू तब, केवल रवि बन चमके।।

धनपति समवसरण रच करके, ज्ञानकल्याणक पूजें।
गंधकुटी में संजातक प्रभु,पूजत भव से छूटें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संजातकतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संप्रति केवलज्ञानी जिनवर, शिवरमणी पायेंगे।
मृत्यु नाश मृत्युञ्जय होकर, सिद्धालय जायेंगे।।
इंद्र सभी प्रभु मोक्षकल्याणक,पूजेंगे भक्ती से।
मैं भी पूजूँ मोक्षकल्याणक ,नशें कर्म युक्ती से।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संजातकतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा)–

श्री संजातक नाथ हैं, पंचकल्याणक नाथ।
मैं अनाथ भक्ती करूँ , मुझको करो सनाथ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संजातकतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री स्वयंप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौबोल छंद–

विजय मेरु पूरब विदेह में, सीता नदि दक्षिण तट में।
विजया नगरी मित्रभूति पितु , सुमंगला माँ आँगन में।।
रत्न बरसते धनपति द्वारा, इंद्रों ने तब आकर के।
गर्भमहोत्सव किया मुदित हो, हम भी पूजें रुचि धरके।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य स्वयंप्रभ तीर्थंकर ने, पृथ्वी पर जब जन्म लिया।
इंद्राणी माँ के प्रसूतिगृह ,जाकर शिशु का दर्श किया।।
सौधर्मेंद्र प्रभू को लेकर, रूप देख नहिं तृप्त हुआ।
नेत्र हजार बनाकर निरखे, जन्मोत्सव कर मुदित हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र चिन्हयुत प्रभु विरक्त हो,अनुप्रेक्षा चिंतें मन में।
रत्नखचित पालकी सजाकर, इंद्र सभी आये क्षण में।।
श्रेष्ठ मनोहर वन में पहुँचे, प्रभु ने दीक्षा स्वयं लिया।
मनपर्ययज्ञानी ध्यानी को, जजत मिले वैराग्य प्रिया।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मौन सहित प्रभु तपश्चरण कर, ध्यानलीन तिष्ठे उत्तम।
शुक्लध्यान से घात घातिया, केवलज्ञान हुआ अनुपम।।
सुरपति ऐरावत गज पर चढ़, अगणित विभव सहित आये।
गजदंतों सरवर कमलों पर, अप्सरियाँ जिनगुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संप्रति जिनवर समवसरण में, भव्यों को संबोध रहे।
सर्व कर्म हन शिव पायेंगे, उन वंदत शिवसौख्य लहें।।
इंद्र असंख्यों देव देवियों , सहित नित्य वंदन करते।
गणधर वंदित मोक्षकल्याणक,पूजत निज संपति भरते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

नाथ स्वयंप्रभ विश्व में, शत इंद्रों से वंद्य।
नमूँ नमूँ मैं भक्ति से, मिटे सर्वदुख द्वंद्व।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री ऋषभानन तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद–

वर धातकी पश्चिम विदेहे, नदी सीतोदा तटे।
नगरी सुसीमा पिता नृपकीर्ती प्रजापालक कहें।।

माँ वीरसेना गर्भ में, आये प्रभू त्रिभुवनपती।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, पूजत मिले अनुपम गती।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृगपती चिन्ह समेत तीर्थंकर,प्रभू शुभ योग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।
तिहुँ लोक में भी हर्ष छाया, तीर्थकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषिगण यहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् निमित को प्राप्त कर, वैराग्य उपजा नाथ को।
देवर्षिगण आये वहाँ, संस्तव किया अति मुदित हो।।
पालकी मणिमय में बिठा, उद्यान सुंदर ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली प्रभो, त्रैलोक्य में वंदित हुए।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश ऋषभानन प्रभू , कैवल्य लक्ष्मीपति हुये।
धनदेव कृत द्वादश सभा के , नाथ कमलापति हुये।।
अनुपम समवसृति मध्य में, तीर्थेश प्रभु राजें वहाँ।
द्वादश गणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

भगवान जब शिव जायेंगे, तब जायेंगे फिरभी यहाँ।
उन भक्तगण प्रभु पूजकर, निज संपदा पाते अहा।।
प्रभु भक्ति भवदधितारणी,भवदुःख संकटहारिणी।
संपूर्ण सौख्यप्रदायिनी, मैं जजूँ आनंदकारिणी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्री ऋषभानन तीर्थकर, पंचकल्याणक ईश।
परम सिद्ध पद हेतु मैं, नमूँ नमाकर शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री अनंतवीर्य तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद–

पूर्व धातकी खण्ड, अपर विदेह नदी तट।
पुरी अयोध्या वंद्य, पिता मेघरथ सुरनुत।।
मात मंगला स्वप्न, अवलोकें हर्षित मन।
रत्नवृष्टि धनराज, करते थे प्रमुदित मन।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतवीर्यतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया भगवान, इंद्र महोत्सव कीया।
हस्ति चिन्ह अमलान, त्रिभुवन आनंद लीया।।
पूजूँ भक्ति समेत, अनंतवीर्य भगवंता।
परमामृत सुख हेतु , नमूँ नमूँ शिवकांता।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विरक्ति मन लाय, द्वादश भावन भायी।
लौकान्तिक सुर आय, चरण जजें शिर नाई ।।
इंद्र सुरासुर आय, तपकल्याण मनाया ।
पूजूँ मन हर्षाय, मिले जिनेश्वर छाया।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घोर तपस्या धार, घाति कर्म को नाशा।
केवल रवि प्रगटाय, सकल जगत परकाशा।।
समवसरण के ईश, दिव्यध्वनी के स्वामी ।
नमूँ नमूँ नत शीश,तुम हो अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सकल कर्म को नाश, प्राप्त करेंगे शिव को।
सकल काल विश्राम, पावेंगे निजसुख को।।
तीर्थंकर भगवान, सिद्धिरमा के स्वामी।
जजत मिले भव अंत, बनूँ स्वात्म विश्रामी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा)–

तीर्थंकर पद कंज को, पंचम गति के हेतु ।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, मिले भवोदधि सेतु ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाननतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य (दोहा)–

संजातक अरु स्वयंप्रभ, ऋषभानन जिनराज।
जिनवर अनंतवीर्य को, जजत सरें सब काज।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(108 बार या 9 बार)

जयमाला

–दोहा–

वैभव अतुल अनंतयुत, समवसरण अभिराम।
रत्नत्रय निधि हेतु मैं, शत शत करूँ प्रणाम।।1।।

–शेर छंद–

हे नाथ! आप तीन लोक में महान हो।
हे नाथ! आप सर्व सौख्य के निधान हो ।।
मैं बार बार आप चरण वंदना करूँ।
सम्यक्त्व रत्न हेतु नाथ अर्चना करूँ।।2।।

हे नाथ! आप भक्ति से संपूर्ण दुख टरें।
हे नाथ! आप भक्ति रोग शोक को हरे।।
हे नाथ! आप भक्ति से सब आपदा टलें।
हे नाथ! आप भक्त को सब संपदा मिलें।।3।।

तुम भक्त को कभी भी इष्ट का वियोग ना।
तुम भक्त को कभी अनिष्ट का संयोग ना।।
तुम भक्त के संपूर्ण अमंगल विनश्यते।
तुम भक्त को सर्पादि जंतु डस नहीं सकें।।4।।
गज सिंह व्याघ्र क्रूर जंतु शांतचित बनें।
तुम भक्ति के प्रभाव शत्रु मित्रसम बनें।।
तुम भक्ति के प्रभाव ईति भीतियाँ टलें।
तुम भक्ति से व्यंतर पिशाच भूत भी टलें।।5।।
हे नाथ! आप पाय मैं निहाल हो गया।
सम्यक्त्व रत्न से ही मालामाल हो गया।।
मैं आप सदृश सिद्ध हूँ चिन्मूर्ति आतमा।
बस आप भक्ति से ही बना अंतरात्मा।।6।।
परमात्मा बन जाऊँ नाथ! शक्ति दीजिये।
चारित्र लब्धि पूर्ण करूँ युक्ति दीजिये।।
अपने ही चरण में प्रभो स्थान दीजिये।
सज्ज्ञानमती संपदा का दान दीजिये।।7।।

दोहा– **नाथ!आपकी भक्ति से, भक्त बनें भगवान।**
पुनः अनंतों काल तक, रहें पूर्ण धनवान।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसंजातकस्वयंप्रभ-ऋषभाननअनंतवीर्यनामविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोगकर फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल '' ज्ञानमति '' हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. 4

पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थ तीर्थंकर पूजा

–स्थापना (गीता छंद)–

पश्चिम सुधातकि खण्ड में, वर पूर्व अपर विदेह हैं।
उनमें सदा विहरें जिनेश्वर, चार अनुपम देह हैं।।
ये सूरिप्रभ व विशालकीर्ती, वज्रधर चंद्रानना।
आह्वान कर पूजूँ उन्हें, होवे निजात्म प्रभावना।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-विशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननानामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-विशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननानामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-विशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननानामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

–अथ अष्टक (चामर छंद)–

पवित्र नीर स्वर्ण भृंग में भराय लाइया।
जिनेंद्र पाद पद्म में त्रिधार को कराइया।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पवित्र गंध लेय नाथ पाद पद्म चर्चिया।
समस्त ताप नाश हेतु आप चर्ण पूजिया।।

अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यःसंसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

अखंड श्वेत शालि पुञ्ज आपको चढ़ायके।
अखंड संपदा मिले प्रभो तुम्हें मनायके।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब श्वेत लाल पीत वर्ण वर्ण के लिये।
जिनेंद्र आप चर्ण में चढ़ाय मोद पा लिये।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुहाल खीर मोदकादि थाल में भराइया।
प्रभो! तुम्हें चढ़ाय भूख व्याधि को नशाइया।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूर ज्योति ज्वालके जिनेंद्र आरती करूँ।
समस्त चित्त मोह नाश ज्ञान भारती भरूँ।।

अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध धूप अग्नि पात्र में सुखेयके अबे।
समस्त पाप पुञ्ज को जलाय दो प्रभो अबे।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इलायची बदाम द्राक्ष आपको चढ़ावते।
शिवांगना वरें स्वयं समस्त सौख्य पावते।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि अर्घ्य में सुवर्ण पुष्प को मिलायहूँ।
निजात्म तीन रत्न हेतु आपको चढ़ायहूँ ।।
अनंत ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य हेतु अर्चना।
जिनेंद्र! आश पूरिये करूँ अनंत वंदना।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

नाथ पाद पंकेज, जल से त्रय धारा करूँ ।
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा विश्व में ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ ।
मिले आत्मसुख लाभ, जिन पद पंकज पूजते ।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(तृतीय वलय में 20 अर्घ्य)

–सोरठा–

विहरमाण जिनराज, समवसरण में राजते।
पुष्पाञ्जलि कर आज, जजूँ जिनेश्वर को यहाँ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्री सूरिप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–अर्घ्य (गीता छंद)–

पश्चिम सुधातकि द्वीप में वर अचल मेरु प्रसिद्ध है।
पूरब विदेह सुमध्य सीता नदी उत्तर में कहे ।।
विजयापुरी पितु नागराज प्रसू सुभद्रा सुर नमें।
श्री सूरिप्रभ गर्भावतार सुपूजते नहिं भव भ्रमें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसूरिप्रभतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण पुंज भगवन पुण्यफल, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे ,शत इंद्रगण हर्षित अबे।।
सुर शैल पर तीर्थेश प्रभु का, जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्म कल्याणक जजत, मेरा जनम पावन हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसूरिप्रभतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु राज्य शासन किया, फिर मन में विरक्ती छा गई।
सुरगण स्वयं ही आ गये, वर पालकी तब आ गई।।
सुरपति मनोहर बाग में, लेकर गये प्रभु चौक पे।
''सिद्धं नमः'' कह लोच कर, दीक्षा ग्रही पूजूँ अबे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसूरिप्रभतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विध तपस्या कर जिनेश्वर, शुक्लध्यानी हो गये।
दीक्षा तरू तल में त्रिलोकी, सूर्य केवल पा गये।।
सुंदर समवसृति में अधर, तिष्ठे असंख्यों भव्य को।
संबोध वच पीयूष से, तारा जजूँ जिनसूर्य को।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसूरिप्रभतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काल भू पर श्रीविहार, समस्त जन सुख हेतु हैं।
गुणथान चौदह के उपरि, मुक्तीनगर अभिप्रेत है।।
अतिशय अतींद्रिय सौख्य, परमानंद अमृत पायेंगे।
श्री सूरिप्रभ का मोक्षकल्याणक, जजूँ गुण गायके।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसूरिप्रभतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

श्री सूरिप्रभ नाथ को, नमूँ नमूँ शत बार।
सकल विघ्नघन नाशकर, पाऊँ निजगुणसार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसूरिप्रभतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री विशालकीर्ति तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौपाई–

पूर्व विदेह क्षेत्र अमलान, पुण्डरीकिणी नगरी जान।
पिता विजय राजा गुणवान, माता विजया सुर नर मान्य।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविशालकीर्तितीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में तीर्थंकर भगवान, नाम विशालकीर्ति गुणखान।
सुर जन्मोत्सव किया अपार, जजत प्रभू को हर्ष अपार।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविशालकीर्तितीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशी चिन्ह प्रभु राज्य करंत, पुनः विरक्त भये भगवंत।
इंद्र करें उत्सव गुरु मान्य, जजूँ प्रभू का तप कल्याण।।3।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविशालकीर्तितीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा तरु नीचे धर ध्यान, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
पांच सहस धनु अधर जिनेश, जजूँ ज्ञानकल्याण हमेश।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविशालकीर्तितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

कर्म नाश करके शिवकांत, प्रभू बनेंगे अक्षय नान्त।
संप्रति मैं पूजूँ जग सिद्ध , नमूँ मोक्षकल्याण प्रसिद्ध ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविशालकीर्तितीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

नित्य निरंजन परम गुरु, परम हंस चिद्रूप।
पंचकल्याणकपति प्रभो, जजत लहूँ निजरूप।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविशालकीर्तितीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री वज्रधर तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद–

पश्चिम विदेहे अचल मेरू, नदी सीतोदा तटे ।
नगरी सुसीमा पद्मरथ, रानी सरस्वति मातु के ।।
जब गर्भ तिष्ठे इंद्रगण, सुरवृंद माँ पितु को जजें ।
हम गर्भकल्याणक जजत, संपूर्ण दुःखों से बचें ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमास नंतर अवतरें, सुरगृह स्वयं बाजे बजें ।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया ।
सुरशैल पर अभिषव हुआ, पूजत जगत भव कम किया।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्राज्य क्षणभंगुर दिखा, वैराग्य मन में आ गया ।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांति सुर स्तुति किया ।।
इंद्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया ।
प्रभु तपकल्याणक पूजते, मिल जाय जिन दीक्षाप्रिया ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शंख चिन्ह प्रसिद्ध थे, लवलीन आतम ध्यान में।
सब घातिया को घात कर, प्रभु केवली भास्कर बने ।।
धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते ।
द्वादश सभा में भव्य नमते, हम प्रभू को पूजते ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु धर्म अमृत मेघ से, भवि तृप्त कर शिव जायेंगे।
परिपूर्ण परमानंद अमृत, सुख अतीन्द्रिय पायेंगे।।
सौधर्म इंद्र सुरादिगण, निर्वाण पूजन करेंगे।
हम आज ही निर्वाण,कल्याणक जजत सुख भरेंगे ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

तीर्थंकर श्री वज्रधर, वज्र समान महान।
कर्म शत्रु के नाशने, पूजूँ भक्ति प्रधान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री चन्द्रानन तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–सखी छंद–

श्री क्षेत्र विदेह अपर में, सीतोदा नदि उत्तर में।
पुरि पुण्डरीकिणी नृप के, घर में सुरत्न बरसे थे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्राननतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर मुकुट हिले जिन जन्में। प्रभु वृषभ चिन्ह धर जग में।।
अठ एक हजार कलश से। जिन न्हवन किया सुर हरसें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्राननतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रानन नाम प्रसिद्धी। संसार सौख्य से विरती।।
तप लिया स्वयं जा वन में। पूजत मिल जावे तप में।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्राननतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध तप तप करके। प्रभु शुक्लध्यान में तिष्ठे।।
केवल रवि उगा प्रभू के। मैं जजूँ त्रिजग भी चमके।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्राननतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मृत्युञ्जयी बनेंगे। मुक्ती का राज्य करेंगे।।
हम भक्ति भाव से पूजें। भव भव के दुख से छूटें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्राननतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

चंद्रानन जिनराज हैं, त्रिभुवनपति भगवान।
नमूँ नमूँ बहु भक्ति से, पाऊँ स्वात्म निधान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्राननतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

तीर्थंकर जग के पिता, विहरमाण सुरवंद्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, हरूँ सकल जग द्वंद।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-आदिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(108 बार या 9 बार)

जयमाला

–रोला छंद–

जयो जयो जिनराज, तुम महिमा मुनि गावें।
जयो जयो जिनराज, गणधर भी शिर नावें।।
जयो जयो जिनराज, गुण अनंत के स्वामी।
जयो जयो जिनराज, त्रिभुवन अंतर्यामी।।1।।

ज्ञानावरण विनाश, ज्ञान अनंत प्रकाशा।
दर्शनावरण नाश, केवलदर्श प्रकाशा।।
सर्व मोह को चूर, सौख्य अनंत विकासा।
अंतराय कर दूर, वीर्य अनंत विकासा।।2।।

हे प्रभु! आप अनंत, चार चतुष्टय धारी।
शत इंद्रों से वंद्य, त्रिभुवन जन मनहारी।।
नाथ! आपकी जाप, कर्मकलंक विनाशे।
जपूँ जपूँ दिन रात, अनुपम सौख्य प्रकाशे।।3।।

अहो! जगत के सूर्य, मुनिमन कमल विकासी।
अहो! जगत के चंद्र, भविजन कुमुद विकासी।।
अहो! भविकजनबंधु! तुम सम नहिं हितकारी।
त्रिभुवनजन अभिनंद्य, नमूँ नमूँ सुखकारी।।4।।

तीन लोक में आप, एक सुमंगलकर्ता।
हरो सकल दुख ताप, सब सुख मंगलकर्ता।।
तीन लोक में आप, सर्वोत्तम मुनि मानें।
हरो हरो भव ताप, लोकोत्तम जग जाने।।5।।

तीन लोक में आप, सबके लिये शरण हो।
नमूँ नमूँ नत माथ, मेरे आप शरण हो।।

सर्व उपद्रव दूर, करके सब सुख दीजे।
''ज्ञानमती'' सुखपूर, मिले कृपा अब कीजे।।6।।

–घत्ता–

जय जय जिनराजा, जग सिरताजा, निजहितकाजा तुमहिं जजूँ।।
प्रभु निज पद दीजे, ढील न कीजे, अरज सुनीजे नित्य भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीसूरिप्रभ-विशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननानामचतुस्तीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोगकर, फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल '' ज्ञानमति '' हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें ।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पूजा नं.–5

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

वर पूर्व पुष्कर अर्ध में, जो पूर्व अपर विदेह हैं।
उनमें सदा तीर्थेश विहरें, भव्यजन सुखदेय हैं।।
श्री चंद्रबाहू भुजंगम, ईश्वर व नेमिप्रभ जिना।
पूजूँ इन्हें आह्वान कर, पाऊँ अतुल सुख आपना।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुभुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभनामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुभुजंगम-ईश्वरनेमिप्रभनामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुभुजंगम-ईश्वरनेमिप्रभनामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं ।

–अथ अष्टक (नरेंद्र छंद) –

पद्म सरोवर का जल लेकर, कंचन झारी भरिये।
तीर्थंकर पद धारा देकर, जन्म मरण को हरिये।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चंदन काश्मीरी, केशर संग घिसायो।
जिनवर चरण सरोरुह चर्चत, अतिशय पुण्य कमायो।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोती सम तंदुल उज्ज्वल ले, धोकर थाल भराऊँ।
तीर्थंकर पद पुञ्ज चढ़ाकर, अक्षय सुख को पाऊँ।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंपा हरसिंगार चमेली, माला गूंथ बनाई।
तीर्थंकर पद कमल चढ़ाकर, कामव्यथा विनशाई।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेनी गुझिया पूरणपोली, बरफी और समोसे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, क्षुधा डाकिनी नाशें।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नदीप की ज्योती जगमग,करती तिमिर विनाशे।
प्रभु तुम आरति करते करते, ज्ञान ज्योति परकाशे।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप दशांगी धूप घटों में,खेवत उठे सुगंधी।
पाप पुञ्ज जलते इक क्षण में, फैले सुयश सुगंधी।।

विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सेव अनार आम सीताफल, ताजे सरस फलों से।
पूजूँ चरण कमल जिनवर के, मिले मोक्षफल सुख से।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल अर्घ्य सजाकर उसमें, चांदी पुष्प मिलाऊँ।
वाद्य गीत संगीत नृत्य कर, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
विहरमाण चारों तीर्थंकर, त्रिभुवन मंगलकारी।
मैं पूजूँ नित सत्त्व हितंकर, आतम गुण भण्डारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थितश्रीचंद्रबाहुआदि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

–सोरठा–

नाथ! पाद पंकेज, जल से त्रयधारा करूँ।
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा विश्व में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ।
मिले आत्मसुख लाभ, जिनपदपंकज पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य (दोहा)–

पूरब पुष्कर द्वीप में, विहरमाण तीर्थेश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, मिले चिदानंद वेश।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

(चतुर्थ वलय में 20 अर्घ्य)

श्री चंद्रबाहु तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद–

छह महिने ही पूर्व, धनद रतन बरसाये।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हर्षाये।।
इंद्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रबाहुतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब पुष्कर द्वीप, सीता नदि उत्तर में।
देवनंदि पितु मात-सती रेणुका गृह में।।
चंद्रबाहु जिन जन्म, त्रिभुवन मंगलकारी।
इंद्र किया अभिषेक, मैं पूजूँ सुखकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रबाहुतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म चिन्ह धर नाथ, विरतमना सब जग से।
लौकान्तिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तपकल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रबाहुतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, प्राप्त किया प्रभु तप से।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्यध्वनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रबाहुतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पायेंगे निर्वाण, कर्म अघाति नशाके।
आत्यन्तिक सुख शांति, काल अनंतानंते।।
विहरमाण हैं आज, फिर भी शिव पायेंगे।
जजें मोक्षकल्याण, हम भी शिव जायेंगे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रबाहुतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

चंद्रबाहु तीर्थेश के, पंचकल्याणक वंद्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ायके, पाऊँ सुख अभिनंद्य।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चंद्रबाहुतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री भुजंगम तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौपाई–

पूरब पुष्कर पूर्व विदेह, सीता नदि दक्षीण दिशेह।
विजया नगरी जिनमति मात, पूजूँ गर्भकल्याणक नाथ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुजंगमतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिता महाबल हर्षित धन्य, श्री भुजंगम प्रभु का जन्म।
मैं पूजूँ चरणाब्ज जिनेंद्र, जन्म कल्याण जजें शत इंद्र।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुजंगमतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चिन्ह जनवत्सल नाथ, हुये विरक्त महा बड़भाग।
लौकान्तिक सुर भक्ति विशाल, दीक्षा धरी नमूँ नत भाल।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुजंगमतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्लध्यानधारी भगवान, घात घाति ले केवलज्ञान।
समवसरण में प्रभु राजन्त, भक्ति भाव शत इंद्र जजंत।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुजंगमतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिराज्य पायेंगे नाथ, मुझ अनाथ को करें सनाथ।
भक्ति धार मन पूजूँ आज, पाऊँ त्रिभुवन का साम्राज।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुजंगमतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

लोकोत्तर फलप्रद प्रभो! कल्पवृक्ष जिनदेव।
नाथ भुजंगम प्रभु तुम्हें,नमूँ करूँ नित सेव।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुजंगमतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

श्री ईश्वर तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–सखी छंद–

पुष्कर में अपर विदेहा, सीतोदा नदि तट गेहा।
सुर वंदित नगरि सुसीमा, 'गलसेन'पिता की महिमा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ 'ज्वालामति'सुत जन्में, सुर जन्ममहोत्सव कीने।
'ईश्वरप्रभु' नाम तुम्हारा, है सूर्य चिन्ह सुखकारा।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वरतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य समाया मन में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इंद्रों से पूजा पाई, हम पूजें मन हर्षायी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वरतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ध्यान धरा तरु तल में, केवलरवि प्रगटा निज में।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वरतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्द पद पायेंगे, शिवपुरी प्रभू जायेंगे।
शत इंद्र करेंगे अर्चा, पूजन से निज सुख मिलता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वरतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

ईश्वर नाथ जिनेंद्र के, पंचकल्याणक धन्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ायके, पाऊँ निज पद रम्य।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वरतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री नेमिप्रभ तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद–

पूरब पुष्कर पश्चिमविदेह, सीतोदा नदि के उत्तर में।
हैं नगरि अयोध्या के स्वामी, उनकी रानी देखें सपने।।
धनपति ने माता आंगन में, रत्नों की वर्षा अतिशय की।
हम गर्भ कल्याणक को पूजें, नहिं गर्भवास हो पुनः कभी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिप्रभतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जन्में इंद्रासन कंपे, सुरतरु से स्वयं पुष्प बरसे।
सुरगिरि पर सुरपति ले करके, जन्मोत्सव करके अति हरषे।।
प्रभु नाम 'नेमिप्रभ'घोषित कर, माता के आंगन में लाये।
उन वृषभ चिन्ह को मैं पूजूँ , मेरी मन कलियाँ खिल जायें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिप्रभतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वैरागी बन वन पहुँचे, कर केशलोंच जिनदीक्षा ली।
इंद्रों ने अतिशय पूजा की, प्रभु जिनवर मुनिचर्या पाली।।
इस घड़ी प्रभू को हम पूजें, निज दीक्षा का फल मिल जावे।
समकित संयम सुसमाधि मिले, भव भव का भ्रमण विनश जावे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिप्रभतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट ध्यान के बल से प्रभु , घाती कर्मों का घात किया।
कैवल्यश्री को प्राप्त किया , क्षण में त्रिभुवन साक्षात् किया।।
इंदों ने संख्यातीत देव, देवी सह आकर पूजा की।
प्रभु केवलज्ञान कल्याण जजूँ , सज्ज्ञानज्योति प्रगटे निज की।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिप्रभतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण कर्म को हन करके, प्रभु मुक्तिपुरी को जावेंगे।
उन मोक्ष कल्याणक का उत्सव, सुर नर मुनि सभी मनावेंगे।।
मैं मोक्ष कल्याणक पूजा कर, अतिशायी पुण्य प्राप्त कर लूँ।
फिर स्वयं अतींद्रिय पद पाकर, निज गुण अनंत निज में भर लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिप्रभतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

धर्मामृतमय वचन की, वर्षा से भरपूर।
प्रभु मुझ कलिमल धोयके, भर दीजे सुखपूर।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिप्रभतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

नित्य निरंजन ज्योतिमय, परम पिता परमेश।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ायके, जिनवर चरण हमेश।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीचंद्रबाहु-भुजंगमईश्वरनेमिप्रभनामचतुस्तीर्थंकरेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः ।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–नरेन्द्र छंद–

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, गणधर मुनिगण वंदें।
जय जय समवसरण परमेश्वर, वंदत मन आनंदे।।
जय जय चंद्रबाहु तीर्थंकर, जय तीर्थेश भुजंगम।
जय जय ईश्वर तीर्थंकर प्रभु , जय नेमिप्रभ अनुपम।।1।।

प्रभु तुम समवसरण अतिशायी, धनपति रचना करते।
बीस हजार सीढ़ियों ऊपर, शिला नीलमणि धरते।।
धूलिसाल परकोटा सुंदर, पंचवर्ण रत्नों के।
मानस्तंभ चार दिश सुंदर, अतिशय ऊँचे चमकें।।2।।

इनके चारों दिशी बावड़ी, जल अति स्वच्छ भरा है।
आस-पास के कुण्ड नीर में, पग धोती जनता है।।

प्रथम चैत्य प्रासाद भूमि में, जिनगृह अतिशय ऊँचे।
खाई लता भूमि उपवन में, पुष्प खिले अति नीके।।3।।

वन भूमी के चारों दिश में, चैत्य वृक्ष में प्रतिमा।
कल्प भूमि सिद्धार्थ वृक्ष को, नमूँ नमूँ अति महिमा।।
ध्वजा भूमि की उच्च ध्वजायें, लहर लहर लहरायें।
भवन भूमि के जिनबिंबों को, हम नित शीश झुकायें।।4।।

श्रीमण्डप में बारह कोठे, मुनिगण सुर नर बैठे।
पशुगण भी उपदेश श्रवण कर, शांतचित्त वहाँ बैठे।।
गणधर गुरु के पावन चरणों, झुक झुक शीश नमाऊँ।
सर्व रिद्धि के स्वामी गुरु को, वंदत विघ्न नशाऊँ।।5।।

गंधकुटी के मध्य सिंहासन, जिनवर अधर विराजें।
प्रातिहार्य की शोभा अनुपम, कोटि सूर्य शशि लाजें।।
सौ इंद्रों से पूजित जिनवर, त्रिभुवन के गुरु मानें।
नमूँ नमूँ मैं हाथ जोड़ कर, मेरे भव दुख हाने।।6।।

–दोहा–

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, चिंतित फल दातार।
''ज्ञानमती'' सुख संपदा, दीजे निज गुण सार।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीचंद्रबाहु-भुजंगमईश्वरनेमिप्रभनामचतुस्तीर्थंकरेभ्यःजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोगकर फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल '' ज्ञानमति '' हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पूजा नं.–6

पश्चिम पुष्करार्धद्वीप संबंधि तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

वर अपर पुष्कर द्वीप में, जो पूर्व अपर विदेह हैं।
उनमें जिनेश्वर विहरते, भविजन धरें मन नेह हैं।।
उन चार तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ इत थापना।
पूजूँ अतुल भक्ती लिये, पाऊँ अचल पद आपना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनमहाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यनामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनमहाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यनामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनमहाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यनामचतुस्तीर्थंकरसमूह!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं ।

अथ अष्टक (चाल- नंदीश्वर पूजा)

मुनि मन सम उज्ज्वल नीर,कंचन भृंग भरूँ।
मिट जावे भव भव पीर, जिन पद धार करूँ।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

काश्मीरी गंध सुगंध, चंदन संग किया।
जिन पादांबुज चर्चंत, आतम सौख्य लिया।।

श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

शशि किरणों सम अतिश्वेत, तंदुल पुंज धरूँ।
निज अक्षय पद के हेतु , पूजत हर्ष भरूँ।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

बेला चंपक की माल, चरणों अर्पत हूँ।
मिल जावे निज गुणमाल, तुम पद अर्चत हूँ।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पेड़ा बरफी पकवान, तुम ढिग भेंट करूँ।
हो क्षुधा वेदनी हान, आतम सौख्य भरूँ।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक की ज्योति उद्योत, बाह्य तिमिर नाशे।
तुम आरति से प्रद्योत, ज्ञानमणी भासे।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर धूप सुगंधित खेय, कर्म जलाऊँ मैं।
तुम चरण कमल को सेय, निज सुख पाऊँ मैं।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर सेब बादाम, तुम ढिग अर्पत हूँ।
मिल जावे निज विश्राम, तुम पद अर्चत हूँ।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक वसु अर्घ्य, आप चढ़ाऊँ मैं।
नव निधि सुख होय अनर्घ, आप रिझाऊँ मैं।।
श्री विहरमाण जिनराज, पूजूँ मन लाके।
मिल जावे निज साम्राज, समरस सुख पाके।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यःअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

–सोरठा–

नाथ पाद पंकेज, जल से त्रयधारा करूँ।
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा विश्व में।।10।।

शांतये शांतिधारा ।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ।
मिले आत्म सुखलाभ, जिनपद पंकज पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(पंचम वलय में 20 अर्घ्य)

–दोहा–

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, विहरमाण तीर्थेश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, मिटे सर्व मन क्लेश।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्री वीरसेन तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद–

पश्चिम पुष्कर पूरब विदेह, सीता नदि के उत्तर जानो।
पुरि पुण्डरीकिणी भानुमती, माता भूपाल पिता मानो।।
गर्भावतार से छह महिने, पहले रत्नों की वर्षा की।
श्री वीरसेन का गर्भकल्याणक, पूजत मिटती भव व्याधी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू पर जन्म महोत्सव कर, इंद्रों ने आनंद नृत्य किया।
पितु माता धन्य हुए जग में, जनता में हर्ष अपार हुआ।।
प्रभु जन्मकल्याणक जजते ही, मिल जाती सब सुख संपत्ती।
मैं भी जिनवर पूजा करके, पा जाऊँ निज सुख संपत्ती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के मन जब वैराग्य हुआ, लौकान्तिक सुरगण आये थे।
प्रभु की स्तुती प्रशंसा कर, अतिशायी पुण्य कमाये थे।।
प्रभु ने स्वयमेव नमः सिद्धं , उच्चारण कर ली जिनदीक्षा।
मैं भी प्रभु तपकल्याण जजूँ , जिससे मिल जावे तप शिक्षा।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने उग्रोग्र तपस्या कर, कैवल्य सूर्य को प्रगट किया।
धनपति ने समवसरण रचकर, निज के जीवन को धन्य किया।।

संख्यातीते देवों ने भी, प्रभु की दिव्यध्वनि श्रवण किये।
मैं केवलज्ञान कल्याण जजूँ , जग जावे ज्ञानज्योति हृदये।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावत चिन्ह कहा प्रभु का, प्रभु समवसरण में राज रहे।
आगे संपूर्ण कर्म हन कर, शिव पायेंगे यह शास्त्र कहें।।
श्री वीरसेन भगवान मेरी, रत्नत्रय निधि को पूर्ण करें।
मैं मोक्ष कल्याणक नित पूजूँ , मेरा यम संकट तूर्ण हरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

वीरसेन तीर्थेश के, जजूँ पंचकल्याण।
नमूँ नमूँ गुण गायके, पाऊँ स्वात्म निधान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री महाभद्र तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद–

विद्युन्माली पूरब विदेह, सीतानदि के दक्षिण दिश में।
विजया नगरीपति देवराज हैं, जनक उमा माता सच में।।
प्रभु ''महाभद्र'' गर्भावतार, धनपति ने रत्नवृष्टि की थी।
मैं पूजूँ गर्भकल्याणक नित, पा जाऊँ जिनगुण संपत्ती।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जन्म हुआ सुरपति गृह में, स्वयमेव वाद्य सब बाज उठे।
इंद्रों के मुकुट झुके तत्क्षण, सुरतरु से विविध सुमन बरसे।।
सौधर्म इंद्र ने मेरू पर, प्रभु जन्म कल्याणक न्हवन किया।
प्रभु जन्म कल्याणक जजते ही, संपूर्ण दुखों का शमन किया।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने कचलोंच किया विधिवत् , जैनेश्वरि दीक्षा ग्रहण किया।
उग्रोग्र तपस्या कर करके, भव्यों का मार्ग प्रशस्त किया।।
प्रभु का जो तप कल्याण जजें, निर्विघ्न मोक्षपथ पाते हैं।
हम भी प्रभु तपकल्याणक की, पूजा करके हरषाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु महाभद्र तीर्थंकर को, जब केवलज्ञान प्रकाश मिला।
त्रिभुवन में भी आनंद हुआ, सब जनता का मन कमल खिला।।
प्रभु कमलासन पर अधर रहें, भव्यों को नित संबोध रहें।
मैं पूजूँ ज्ञानकल्याणक नित, प्रकटित हो ज्ञानज्योति हृदये।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि चिन्ह से प्रभु को पहचानो, संप्रति ये समवसरण में हैं।
सिद्धी कन्या को पायेंगे, निश्चित यह आगम वर्णित है।।
इनके निर्वाण कल्याणक की, हम पूजा नितप्रति करते हैं।
भावी सिद्धों का अर्चन कर, संपूर्ण अमंगल हरते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

महाभद्र तीर्थेश प्रभु , जग में करें सुभद्र ।
जो पूजें नित भक्ति से, वे बन जाते भद्र ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरसेनतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

श्री देवयशो तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।

पश्चिम पुष्कर अपर विदेहे, सीतोदा के दक्षिण में।
श्रीभूती पितु गंगा देवी, मात सुसीमा नगरी में।।
गर्भ बसे प्रभु स्वप्न दिखाकर, पूजा गर्भकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवयशोतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।
मति श्रुत अवधि ज्ञानयुत, स्वस्तिक चिन्ह सहित प्रभु जन्मे थे।
मेरू पर जन्माभिषेक में, देव देवियाँ हर्षे थे।।
जन्म कल्याणक पूजा करते, मिले राह उत्थान की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवयशोतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।
नाम देवयश रखा इंद्र ने, सब जन मन संतुष्ट हुये।
प्रभु को जब वैराग्य हुआ, इंद्रों ने आ संस्तवन किये।।
दीक्षा क्षण जजते मिल जावे, बुद्धि आत्मकल्याणकी।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवयशोतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।

घाति चतुष्टय घात किया प्रभु ,केवलज्ञान सूर्य प्रगटा।
समवसरण बन गया अधर में, धनद भक्ति में झूम उठा।।
गंधकुटी में किया सभी ने, पूजा केवलज्ञान की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवयशोतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।
सर्व अघाती नाश मुक्ति-कन्या परणेंगे तीर्थंकर।
नाथ देवयश सौ इंद्रों नुत, मुनीवंद्य जगपूज्य प्रवर।।
जो निर्वाणकल्याणक पूजें, मिले राह निर्वाण की।
इंद्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वंदे जिनवरं -4 ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवयशोतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

प्रभू देवयश इंद्रनुत, पंचकल्याणक ईश।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय नित, नमूँ नमाकर शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीदेवयशोतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

श्री अजितवीर्य तीर्थंकर पंचकल्याणक अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भकल्याणक जजते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

विद्युन्माली मेरु पश्चिम, विदेह नदि के उत्तर में।
पुरी अयोध्या पितु सुबोध नृप,प्रसू कनकमाला उर में।।
गर्भ बसे जगवंद्य नमूँ नित, मिले निजातम सार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितवीर्यतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।
श्री ह्री आदिक देवी नुत, माता से प्रभु का जन्म हुआ।
मेरू पर ले जा वैभवयुत, इंद्रों ने प्रभु न्हवन किया।।
कमल चिन्हयुत जिनवर जजते,हो जाते भव पार हैं।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितवीर्यतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।
अजितवीर्य प्रभु नाम रखा, इंद्रों ने पूजा भक्ति किया।
जब वैराग्य हुआ प्रभुवर को, लौकान्तिक सुर स्तवन किया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितवीर्यतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।

घोर तपश्चर्या कर प्रभु ने,घातिकर्म को दग्ध किया।
धनपति ने आकर भक्ती से, समवसरण झट बना दिया।।
अजितवीर्य श्री केवलि प्रभु का, समवसरण हितकार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितवीर्यतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भण्डार है।।
अजितवीर्य.....।।
सर्व अघाती कर्म नाश कर, मोक्षधाम में जायेंगे।
सिद्धिप्रिया शिवराज्य प्राप्त कर, शाश्वत काल बितायेंगे।।
मुनी गणाधिप पूजा करके, पायेंगे सुखसार है।
अजितवीर्य प्रभु चरण कमल में,वंदन शत शत बार है।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितवीर्यतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

ज्ञान नेत्र से लोकते, लोकालोक समस्त।
अजितवीर्य तीर्थेश मम, शिवपथ करोप्रशस्त।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअजितवीर्यतीर्थंकरपंचकल्याणकेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, शाश्वत चार जिनेश।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, करो सर्व दुख शेष।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनमहाभद्रदेवयशोजितवीर्यनामचतुस्तीर्थंकरेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र में, चउ जिनवर विहरण करते हैं।
पूरब धातकि पश्चिम धातकि में, चउ चउ जिनवर राजत हैं।।
पूर्वापर पुष्करार्ध में भी, चउ चउ तीर्थंकर शोभ रहें।
इन बीस तीर्थंकर को यजते, हम परम अतीन्द्रिय सौख्य लहें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्र- पूर्वधातकीखण्डद्वीप-पश्चिमधातकीखण्ड-द्वीपसंबंधिविदेहक्षेत्र-पूर्वपुष्करार्धद्वीप-पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविदेह-क्षेत्रस्थितविद्यमान-श्रीसीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरिप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-चंद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वरनाथ-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयश-अजितवीर्यनामविंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–स्रग्विणी–

नाथ! त्रैलोक्य के पूर्ण चंदा तुम्हें।
मैं नमूँ नमूँ हे जिनंदा तुम्हें।।
पूरिये नाथ! मेरी यही कामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।1।।

सोलहों भावना भाय जिनपाद में।
तीर्थकर हो गये आप ही आप में।।
मात के गर्भ में आप जब आ गये।
इंद्र उत्सव किये मात घर आ गये।।2।।

जन्मते आपके इंद्र आसन कंपे।
शंख ध्वनि वाद्य घंटा स्वयं बज उठे।।

इंद्र के मौलि शेखर स्वयं झुक गये।
कल्पतरु भी स्वयं पुष्प बरसा रहे।।3।।

जै जया जै जया जै जया ध्वनि उठी।
इंद्र आदेश पा इंद्र सेना सजी।।
इंद्र ऐरावतारूढ़ हो चल पड़े।
इंद्र इंद्राणियाँ देवगण चल पड़े।।4।।

मेरु गिरि पर न्हवन आपका हो रहा।
जन्म कल्याण उत्सव अनोखा कहा।।
इंद्र हज्जार भुज कर न्हवन कर रहा।
नेत्र हज्जार कर रूप निरखे अहा।।5।।

तीर्थकर देव माहात्म्य त्रैलोक्य में।
ना हुआ अन्य का भी कभी लोक में।।
तीर्थकर पुण्य माहात्म्य मुनि गावते।
देव गणधर कहें पार ना पावते।।6।।
धन्य मैं धन्य मैं आज गुण गा रहा।
धन्य है यह घड़ी नाथ पूजूँ अहा।।
प्रार्थना नाथ! मेरी ये सुन लीजिये।
''ज्ञानमति''पूर्ण हो युक्ति ये दीजिये।।7।।

–घत्ता–

जय जय जिनराजा, शिवतिय राजा,भविहित काजा,तुमहिं नमूँ।
जय जय निज संपति, दीजे मुझ प्रति,अविचल गति हित, नित प्रणमूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीर-सेनमहाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यनामचतुस्तीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जो विहरमाण जिनेंद्र बीसों का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोगकर फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल '' ज्ञानमति '' हो मुक्ति लक्ष्मी वश करें।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

प्रशस्ति

दोहा - **वीर अब्द पच्चीस सौ, तेरह मगसिर मास।**
सुदि दशमी हस्तिनापुरी, तीर्थ धर्म की राशि।।1।।

विद्यमान श्री बीस जिन, पूरण किया विधान।
गणिनी ज्ञानमती रचित, सब जन सौख्य निधान।।2।।

जब तक जग में मेरु है, जब तक सूर्य प्रकाश।
तब तक श्रेष्ठ विधान यह, पूरे भविजन आश।।3।।

।। इति वर्धतां जिनशासनं।।

बीस तीर्थंकर आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे.....

आरती बीस जिनेश्वर की-2
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर पांच विदेहों की।।आरती.।।

जम्बूद्वीपादिक ढ़ाई, द्वीपों में पांच विदेहा।
हैं चार-चार पांचों में, होते तीर्थंकर देवा।।
आरती बीस.....।।1।।

हैं आज भी उन क्षेत्रों में, विहरण करते तीर्थंकर।
इसलिए कहे जाते हैं, ये विहरमाण तीर्थंकर।।
आरती बीस.....।।2।।

सीमन्धर आदिक उन ही, जिनवर की ये प्रतिमाएं।
कमलों पर राज रही हैं, ये बीसों जिनप्रतिमाएं।।
आरती बीस.....।।3।।

उनका यह पावन मंदिर, है प्रथम बार इस भू पर।
गणिनी माँ ज्ञानमती की, प्रेरणा मिली है सुन्दर ।।
आरती बीस.....।।4।।

इनकी आरति कर मैं भी, तीर्थंकर बनना चाहूं।
''चन्दनामती'' कब प्रभु का, साक्षात दर्श कर पाऊं।।
आरती बीस.....।।5।।

श्री सहस्रकूट चैत्यालय पूजा

रचयित्री—आर्यिका चन्दनामती

—स्थापना (शंभु छन्द) —

जिनवर की एक हजार आठ, प्रतिमाओं से जो शोभ रहा।
वह सहस्रकूट जिन चैत्यालय, भव्यों के मन को मोह रहा।।
इनकी पूजन से पाप सहस्रों, शान्त स्वयं हो जाते हैं।
आह्वानन स्थापन विधि से, पूजा जो भक्त रचाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम्।

—अष्टक (शंभु छंद) —

क्षीरोदधि के पावन जल से, जिनवर पद का प्रक्षाल करूँ।
निज जन्म-मरण के नाश हेतु, प्रभु चरणों का मैं ध्यान करूँ।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि का चंदन घिसकर, प्रभु चरणों में चर्चन कर लूँ।
संसार ताप हो नाश मेरा, इस हेतु चरण वन्दन कर लूँ।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चावल पुञ्जों के अक्षत को, प्रभु सम्मुख मैं अर्पण कर लूँ।
अक्षय पद की प्राप्ती हेतू, जिन प्रतिमा का अर्चन कर लूँ।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब चम्पा आदिक, सुमनों का थाल समर्पित है।
हो विषयवासना की शान्ती, प्रभु सम्मुख भाव भी अर्पित हैं।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

खाजे ताजे आदिक पकवानों, का मैं थाल सजा लाया।
क्षुधरोग विनाशन हो मेरा, यह आशा ले करके आया।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक से आरति करके, मन का अन्धेर भगाना है।
मोही मति को निर्मोही कर, सम्यक्त्व का दीप जलाना है।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं धूप सुगंधित अग्निपात्र में, खेकर कर्म दहन कर लूँ।
फिर शान्तभाव से पूजन करके, पूज्य परमपद को वर लूँ।।

श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला अंगूर आदि, ताजे फल से पूजन कर लूँ।
प्रभु के सम्मुख अर्पण करके, क्रम से फल निजपद को वर लूँ।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत आदि अष्ट-द्रव्यों का थाल सजा करके।
''चन्दनामती'' प्रभु सम्मुख अर्पण, कर लूँ भाव बना करके।।
श्री सहस्रकूट चैत्यालय के, जिनबिम्बों को मैं नमन करूँ।
निज के सहस्रगुण मिल जावें, तो आतम उपवन चमन करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वहा।

–दोहा–

गंग नदी का नीर ले, करूँ चरण जलधार।
सहस्रकूट जिनबिम्ब की, पूजन है सुखकार।।10।।

शान्तये शांतिधारा।।

फूलों के उद्यान से, सुरभित पुष्प मंगाय।
आत्मतत्त्व के ध्यान से, पुष्पित हो निजकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। (9 बार)**

जयमाला

–शेर छन्द–

जय जय सहस्रकूट जिनालय महान है।
जय जय सहस्र बिम्ब का अतिशय महान है।।
जय जय प्रभू की अर्चना का फल महान है।
जय जय प्रभू की वन्दना सुख का निधान है।।1।।

जो एक लघु मंदिर का भी निर्माण करते हैं।
सरसों समान बिम्ब भी निर्माण करते हैं।।
उनके असीम पुण्य की तुलना न हो सके।
जिनबिम्ब दर्श की कोई उपमा न हो सके।।2।।

तो फिर सहस्रकूट जिनालय की क्या कहूँ।
उन बिम्ब के निर्माण पुण्य को ही मैं चहूँ।।
अरिहन्त की इक सहस्र आठ मूर्तियाँ इसमें।
आत्मा के गुण को प्रगटने की क्षमता है इनमें।।3।।

चहुँ ओर कर प्रदक्षिणा प्रतिमाओं को निरखो।
उनकी विराग शान्त छवी भाव से परखो।।
तन मन की शांति में निमित्त हैं ये मूर्तियाँ।
सम्यक्त्व प्राप्ति में निमित्त हैं ये मूर्तियाँ।।4।।

प्रभु दर्श से जनम-जनम के पाप दूर हों।
प्रभु दर्श से संसार के संताप दूर हों।।
प्रभु दर्श से ही मोह का परिताप चूर हो।
प्रभु दर्श से सम्यक्त्व का प्रकाशपूर्ण हो।।5।।

मेंढक भी कमलपुष्प ले प्रभु दर्श को चला।
उसको भी पुण्यफल स्वरूप देवपद मिला।।
तिर्यञ्च भी जब ऐसे फल को प्राप्त कर सकें।
तब क्यों न मनुज दर्श से शिवपद को वर सकें।।6।।

मैं एक साथ सहस्राष्ट प्रतिमा को नमूँ।
दर्शन करूँ वन्दन करूँ शिरसा उन्हें प्रणमूँ।।
थाली में अष्टद्रव्य ''चन्दनामती'' धरूँ।
पूर्णार्घ्य समर्पण के साथ शिवगती वरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्रकूटजिनालयस्थित जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जो भव्य भक्ति से सहस्रकूट, जिनबिम्बों का अर्चन करते।
मन वचन काय से शीश झुका, उन सबको नित वन्दन करते।।
वे लौकिक सुख के साथ-साथ, आध्यात्मिक सम्पत्ती लभते।
''चन्दनामती'' क्रमशः सहस्रगुण के संग स्वात्म निधी वरते।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री - आर्यिका चंदनामती

–स्थापना –

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधीकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अष्टक –

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।

घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेर मन भी पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शेरछंद – **हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।**
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।

कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

–दोहा –

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन –नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।

शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।।माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।।माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।

शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।।माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।

माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।।माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।

तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।।माता.....।।

प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।।माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।।माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।

यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।

गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

दोहा – लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– शंभुछंद –

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदापूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज - ज्योति से ज्योति जलाते चलो.....

विश्वशांति की ज्योति जली,
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के,
द्वारा अहिंसा की ज्योति जली।।टेक.।।

धर्म और विज्ञान ने धरती-का सदैव शृंगार किया।
इक दूजे के पूरक बनकर, नामों को साकार किया।।
दोनों की जोड़ी है लगती भली,
विश्वशांति की ज्योति जली।।1।।

कलियुग में विज्ञान ने अपना, धर्म से नाता तोड़ लिया।
अणु-बम एटम-बम निर्मित कर, मानवता को छोड़ दिया।।
इसीलिए गुरुओं की प्रेरणा मिली,
विश्वशांति की ज्योति जली।।2।।

बिन लगाम का घोड़ा जैसे, आतंकी बन जाता है।
बिना धर्म के वैसे ही, विज्ञान भी धोखा खाता है।।
इसीलिए दोनों की जोड़ी बनी,
विश्वशांति की ज्योति जली।।3।।

शांतिवर्ष यह दो हजार नौ, शांतिदूत बन आया है।
मैत्री का संदेश ''चंदना-मती'' सभी ने पाया है।।
गूंजे अहिंसा की जय हर गली,
विश्वशांति की ज्योति जली।।4।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज - ज्ञानमती नाम मेरे जीवन का सहारा है.....

जग की शांति हेतु, केवल धर्म ही सहारा है।
केवल धर्म ही सहारा है, यही सन्तों का इशारा है।।
शांतिनाथ मण्डल विधान का, है प्रभाव अतिशयकारी।
शांतिमंत्र के अनुष्ठान का, है प्रचार सबमें भारी।।
दुख संकट हरने वाला भक्तों का यही सहारा है।।जग की.।।1।।

मंत्र जाप्य से चक्रवर्ति को देव भी मार न पाया था।
मंत्र छोड़ते ही उस नृप को देव ने मार गिराया था।।
रणभूमि में कवच के सदृश मंत्र जाप्य ही प्यारा है।।जग की.।।2।।

मैत्री करुणा और अहिंसा यही धर्म कहलाता है।
इसके बल पर देश का गौरव और अधिक बढ़ जाता है।।
जिओ और जीने दो सबको, यही हमारा नारा है।।जग की.।।3।।

प्रभु पूजन अरु शांति मंत्र के शब्द जहाँ तक गूंजेंगे।
वहाँ चंदनामती सभी सुख चैन से प्राणी घूमेंगे।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने दिया यही बस नारा है।।जग की.।।4।।